International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, January-June 2024, Submitted in January 2024, ISSN -2393-8048

प्राचीन काल में अन्त्यजों की आर्थिक स्थितिः एक अध्ययन

Umesh Kumar, Assistant Professor of History, Govt College Madlauda ,Panipat, Research Scholar, NIILM University, Kaithal umeshkumar8783@gmail.com

सारांश

अन्त्यज शब्द का अर्थ भारत में व्यक्तियों के एक ऐसे वर्ग है, जिसे सामान्यत: जाति से बाहर तथा अछूत माना जाता है। यह एक प्राचीन और सबसे अधिक शोषित जाति है। इसे श्मशान पाल, डोम, अंतवासी, थाप, श्मशान कर्मी, अंत्यज, चांडालनी, पुक्कश, गवाशन, दीवाकीर्ति, मातंग, श्वपच आदि नामों से भी पुकारा जाता है वह व्यक्ति जो अंतिम वर्ण में उत्पन्न हुआ हो । वह शुद्र जो प्राचीन युग में छुने के योग्य नहीं माना जाता था या जिसका छुआ हुआ जल द्विज उन दिनों ग्रहण नहीं करते थे प्राचीन विधि संहिता "मनु स्मृति" के अनुसार, इस वर्ग का उदय एक ब्राह्मण महिला और एक शूद्र पुरुष के मिलाप से हुआ था। कुछ विद्वानों का मत है कि नामशूद्र की उत्पत्ति बिहार की राजमहल पहाड़ियों में निवास करने वाली एक आदिम जनजाति से हुई है । समाज के ऐसे वर्ग की आर्थिक स्थिति कैसी थी , इस शोध पत्र के द्वारा इस वर्ग की आर्थिक स्थिति जानने का प्रयास किया जायेगा ।

मुख्य शब्द: अन्त्यज, अछूत, आर्थिक , चाण्डाल, जाति , मलेच्छ, वर्ग, समाज

प्रस्तावना:

अन्त्यज का शाब्दिक अर्थ अन्त में नीच जाति का मानव या चाण्डाल हैं। विभिन्न शब्दकोषों में अन्त्यज का भिन्न-भिन्न अर्थ बताया गया है। वामन शिवराम आप्टे के संस्कृत-हिन्दी कोष' के अनुसार अन्त्यज का अर्थ अन्त में आ आदिम जाति का मनुष्य या मलेच्छ या सात नीच जातियों मे से एक चाण्डाल हैं। मैं | हिन्दी शब्दकोष के अनुसार अन्त्यज शब्द का अर्थ शूद्र या चाण्डाल है.

समाज में सबसे नीचले पायदान पर होने के कारण इनकी आर्थिक स्थिति भी अत्यन्त दयनीय दिखाई देती हैं. इनके द्वारा अपनाये गए पेशों व व्यवसायों के आधार पर इसकी पुष्टि होती है. इस वर्ग द्वारा अपनाये गए व्यवसायों में शिकार करना, मत्स्यपालन, वस्त्रों की धुलाई, लकड़ी काटना सीपियों एवं शंखों का व्यवसाय करना, नौकायन करना, टोकरी बनाना, बांस की लकड़ी से भिन्न-भिन्न सामानों का उत्पादन करना पुष्प व्यवसाय, दुग्ध व्यवसाय नृत्यकला इत्यादि को सम्मिलित किया गया है. जो निम्नलिखित हैं -

उग्र :

मनुस्मृति के अनुसार उग्र भूमि में बिल बनाकर रहने वाले जानवरों अथवा जीवों का शिकार करके तथा उन्हें मारकर अपना जीवन यापन करते थे[1]। इसके विपरीत वैखानस धर्मसूत्र के अनुसार उग्र दण्ड देने का कार्य करते थे।[2] किन्तु किस प्रकार का दण्ड देते थे इसका उल्लेख नहीं मिलता है।

मद्ग एवं चुंचु :

मनुस्मृति के अनुसार मद्गु जंगली पशुओं का शिकार करके अपना जीवन यापन करते थे।[3]वैखानस धर्मसूत्र के अनुसार मद्गु का प्रमुख पेशा व्यापार करना था।[4]

निषाद या पारशव :

वैखानस धर्मसूत्र के अनुसार पारशव जंगली पशुओं का शिकार के द्वारा अपना जीवन निर्वाह किया करते थे।[5] जातकों में इनका प्रमुख कार्य पशु पक्षियों को मारना और आखेट करना बताया गया है।[6]

क्षत्ता एवं पौल्कस या पुल्कस :

मनुस्मृति के अनुसार इनका मुख्य व्यवसाय शिकार करना था। इसके अन्तर्गत वे बिलों में रहने वाले सर्प, नकुल एवं गोधा को पकड़ना एवं मारना मुख्य रूप से सम्मिलित था।

सामुद्र, मत्स्य एवं धीवर :

वैखानस धर्मसूत्र के अनुसार इनका मुख्य व्यवसाय मत्स्य पालन से जुड़ा था।[7]

मृदबन्धक एवं रजक :

वैखानस धर्मसूत्र के अनुसार इन दोनों अन्त्यज जातियों का मुख्य पेशा वस्त्रों की धुलाई

करना था।[8]

कटकार :

वैखानस धर्मसूत्र के अनुसार ये कुल्हाड़ी से लकड़ी काटने के व्यवसाय करता था। इसी के माध्यम से जीवन यापन करता था।[9]

मणिकार :

उशना के अनुसार मणिकार मोतियों, सीपियों एवं शंखों का व्यवासाय करते थे।[10] ये व्यवसाय इनकी जीविका का मुख्य पेशा था।

कैवर्त :

मनुस्मृति के अनुसार यह नाव के माध्यम से अपना जीवन यापन करते थे।[11] आर्यावर्त के वासी इनको कैवर्त कहा करते थे। जातकों में अनेक नाविकों के बारें में पता चलता है।[12]

डोम :

डोमों का मुख्य व्यवसाय टोकरी बनाना है। इसके अतिरिक्त वे बांस की लकड़ी मे अन्य समानों का उत्पादन किया करते थे।[13]

पाण्डुसोपाक :

मनुस्मृति के अनुसार ये बांस की लकड़ी से भिन्न-भिन्न तरह के समानों का उत्पादन किया करते थे। यहीं इनकी आजीविका का मुख्य साधन था।[14]

माली अथवा मालाकार :

व्यासस्मृति के अनुसार यह पुष्प व्यवसाय से जुड़ी अन्त्यज जाति थी।[15]

आभीर एवं गोप :

ये दोनों अन्त्यज जातियों दुग्ध व्यवसाय से जुड़ी थी।[16] अमरकोष में आभीर को गाय चराने वाला कहा गया है।[1]

पुलिन्द :

वैखानस धर्मसूत्र के अनुसार पुलिन्द जंगली पशुओं का शिकार कर अपनी आजीविका चलाते थे।[18]

नर्तक :

नर्तक अन्त्यज जाति का मुख्य पेशा नृत्यकला था जो उसकी आजीविका का प्रमुख पेशा नृत्यकला था जो उसकी जीवन निर्वाह का मुख्य स्त्रोत था।[19]

सैरिन्ध्र, चाण्डाल, चर्मकार, धिग्वण, कारावर, एवं श्वपाक या श्वपच :

वैखानस धर्मसूत्र और मनुस्मृति के अनुसार ये सभी अन्त्यज जातियाँ चमड़ा निर्माण से जुड़ी थी।[20] इसके अतिरिक्त चाण्डाल एवं श्वपच चमड़ा निर्माण के साथ-साथ वध्य जनों का वध करने का भी कार्य करता था।[21] चाण्डाल शव उठाने का भी कार्य करता था।[22]

शूलिक एवं सोपाक :

वैखानस धर्मसूत्र के अनुसार इन दानों अन्त्यज जातियों का कार्य राजा या शासक द्वारा निर्धारित लोगों को कठोरतम दण्ड अर्थात् फाँसी देना था [23]मनुस्मृति के अनुसार सोपाक का पेशा प्राणदण्ड प्राप्त अपराधियों को बध करना था [24]

नापित या नाई :

वैखानस के अनुसार यह अन्त्यज नाभि के नीचे के बाल काटना इसका प्रमुख कार्य था।[24] महाभारत के विराट पर्व में मैरिन्धी के रूप में द्रौपदी ने विराट् रानी की ये सेवायें की थी-केशों को सवारना, लेपन करना, माला बनाना आदि।[26]आदि पर्व के अनुसार सैरिन्ध्र मृगों को मारकर, राजाओं के अन्तःपुरों एवं छुटकारा पाये हुये नारियों की रक्षा करके अपनी जीविका चलाता था (शूद्र कमलाकर में उद्धृत)।[27]

अन्त्यवसायी :

मनु के अनुसार इनका कार्य श्मशान में काम करना था। अर्थात् शवों को उठाना एवं श्मशान तक पहुँचाना था[28]

हाड़ी – इस अन्त्यज का मुख्य पेशा अथवा प्रमुख व्यवसाय स्वच्छता पर विशेष बल देना था।[29]

इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे अन्त्यज जातियाँ हैं जिनके व्यवसाय के विषय में सूचना नहीं मिलती हैं जो क्रमशः निम्न हैं– भृजकण्ठ, दौष्मन्त, यवन, रंजक, बेलव, कृत, म्लेच्छ, रामक, बंदी, भोज, भूप, सूचक, पिंगल, आपीत, आवृत, गृहक, कर्मकार, कुकुन्द, आन्ध्र, कारुष, किरात, मातंग, माणविक, मृतप, बर्बर, भट, अवरीट, औड्र, कम्बोज, कोलक, खस, शक, लिच्छिवि, पहलव, पारद, पुण्ड्र अथवा पौण्ड्रक, भिल्ल, मल्ल, द्रविण, वरट और अशाप इत्यादि।

निष्कर्ष :

इस प्रकार उपरोक्त तथ्यों के अनुशीलन से हम अन्त्यज जातियों को व्यवसाय के आधार पर भी अलग–अलग चार श्रेणियों में बाटें है। इनमें अनुलोम क्रम से उत्पन्न अन्त्यज जातियों के व्यवसाय प्रतिलोम क्रम एवं वर्णसंकर जातियों के व्यवसायों की तुलना में अपेक्षाकृत सम्मानजनक कहा जा सकता है। इसके होते हुए भी इन जातियों को निम्न और अत्यधिक हेय माना गया। ऐसा प्रतीत होता है कि वर्ण संकरता को रोकने के लिए इन सम्मानजनक व्यावसायिक जातियों को भी घृणा की नजर से देखा जाता था।

अध्ययन से यह तथ्य भी प्रकाश में आता है कि प्रतिलोम क्रम में विशेषकर शूद्र पुरूषों से अर्थात् सबसे निम्न वर्ण से अन्य द्विज वर्णों की स्त्रियों में उत्पन्न अन्त्यजों को वर्ण श्रेष्ठता के क्रम में सर्वाधिक निम्न कोटि का माना गया है। उदाहरण के तौर पर शूद्र वर्ण के पुरूष और ब्राह्मण वर्ण की स्त्री के समागम से जनित अन्त्यज को चाण्डाल कहा गया है जिसका व्यवसाय शव तथा कुछ शास्त्रकारों ने शव उठाने अतिरिक्त चमड़ा उत्पादन का कार्य भी बताया है।

चाण्डाल सभी अन्त्यज जातियों में सार्वधिक निम्न कोटि के श्रेणी में माने गये हैं। और उनके लिए कठोर से कठोरतम दण्ड का विधान धर्मशास्त्रों में मिलता है। अन्त्यज जातियों को अपना स्वत्रंत व्यावसाय चुनने का अधिकार प्राप्त नहीं था। यद्यपि ये समाज के लिए उपयोगी काम करते थे किन्तु उनकी व्यवसायों और कार्यों की सामाजिक प्रतिष्ठा नहीं थी जिसकी वजह से उन्हें किसी भी प्रकार का आर्थिक लाभ नहीं मिलता था परिणामस्वरूप उनकी स्थिति अत्यन्त दयनीय थी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 मनुस्मृति 10/49
2 बौधायन धर्मसूत्र 31/3/3
3 मनुस्मृति 10/49
4 बौधायन धर्मसूत्र 31/12/12
5 वही 3/13/2
6 जातक 2/132,3/97,4/364
7 मनुस्मृति 10/49
8 बौधायन धर्मसूत्र 3/14/11-12, गौतम धर्म सूत्र ,1/4/17
9 वही 3/15/9
10 वही 3/13/6
11 उशना 40
12 मनुस्मृति 10/34
13 जातक 2, पृ 267
14 जयशंकर मिश्र, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृ 183
15 मनुस्मृति 10/37
16 व्यास,1/11
17 पी० वी० काणे, धर्मशास्त्रों का इतिहास, भाग 1, पृ० 126
18 वही
19 बौधायन धर्मसूत्र 3/422
20 पी० वी० काणे, पूर्वोक्त
21 मनुस्मृति 10/49, बौधायन धर्मसूत्र 3/15/11
22 मनुस्मृति 10/56
23 वही 10/55
24 बौधायन धर्मसूत्र 3/13/4
25 महाभारत, विराट पर्व, 9/18-19
26 पी०वी० काणे, पूर्वोक्त भाग 1 पृ०139
27 मनुस्मृति 10/39
28 जयशंकर मिश्र, पूर्वोक्त पृ०18